गोम्मटेश्वर बाहुबली

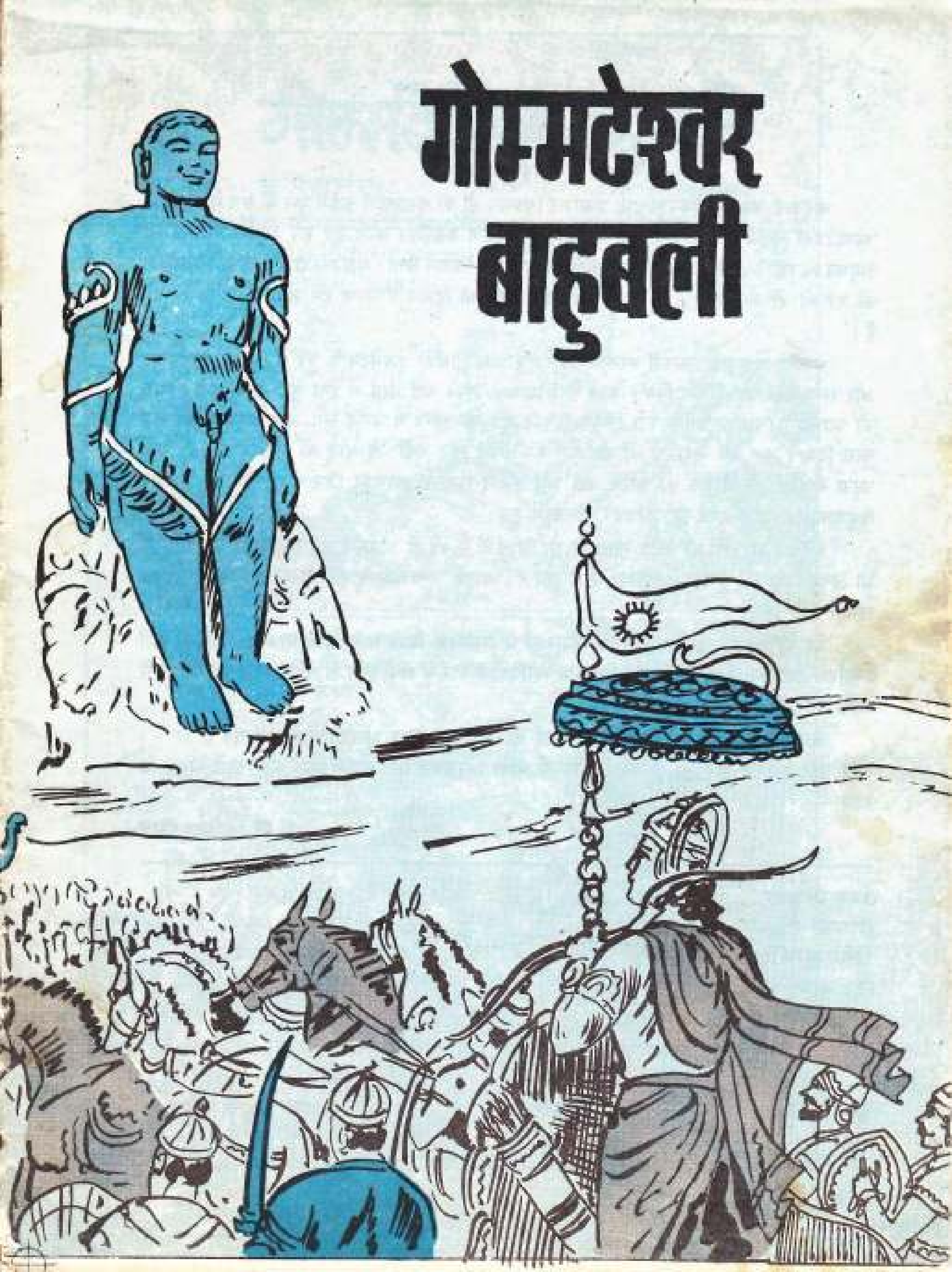

प्रकाशकीय

(द्वितीय संस्करण)

बाहुबली प्रकाशन , जयपुर द्वारा प्रकाशित चित्रकथाओं की श्रृंखला में तृतीय पुष्प के रूप में प्रकाशित 'गोम्मटेश्वर बाहुबली' चित्रकथा का यह द्वितीय संस्करण प्रकाशित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इसके पूर्व 'कविवर बनारसीदास' तथा 'कहान कथा : महान कथा' चित्रकथाएँ प्रकाशित की गई थी जो अल्पकाल में ही समाप्त हो गई। उनके भी द्वितीय संस्करण हम शीघ्र प्रकाशित कर रहे हैं।

भगवान बाहुबली चक्रवर्ती भरत के भ्राता एवं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र थे। अपने स्वाभिमान और राज्य रक्षा का दायित्व निर्वाह करने के लिए उन्हें अपने भाई भरत से द्वन्द्व युद्ध करना पड़ा। भरत को पराजय का सामना करना पड़ा जिससे वे प्रतिशोध की अग्नि में जलने लगे और बाहुबली पर चक्र चला दिया। चक्र जब बाहुबली की प्रदक्षिणा कर वापस लौट गया तो भरत की लोकनिन्दा हुई। यही घटना बाहुबली के वैराग्य का कारण बनी और उन्होंने राजपाट त्यागकर जिन दीक्षा ले ली। भगवान बाहुबली केवलज्ञान प्राप्त कर सर्वप्रथम मोक्षगामी हुए।

भगवान बाहुबली की रोचक गाथा को इस चित्रकथा में बड़े ही आकर्षक ढंग से बालहंस के सम्पादक श्री अनन्त कुशवाहा ने अपनी तूलिका से सजाया है। आपको तथा आपके नन्हें मुन्नों को चित्रकथा रोचक लगेगी ऐसी आशा है।

यह भी प्रसन्नता का विषय है कि राजस्थान से सर्वाधिक बिक्री वाले दैनिक राजस्थान पत्रिका द्वारा प्रकाशित बालहंस पत्रिका में भी यह चित्रकथा धारावाहिक रूप में अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है। जिसे बच्चों ने काफी पसन्द की है।

अब हम शीघ्र ही नयी चित्रकथा 'आचार्य श्री विद्यानन्द' लेकर आपके समक्ष उपस्थित हो रहे हैं। आप सभी भगवान बाहुबली के सदृश त्यागमय जीवन अपनाकर सुख शान्ति प्राप्त करें , इसी भावना के साथ –

■ अखिल बंसल

प्रथम संस्करण : ३२००
(दिसम्बर ९०)
द्वितीय संस्करण : २०००
(३१ जुलाई १९९४)
योग : ५२००

मुद्रक :
बाहुबली प्रिन्टर्स
लालकोठी, जयपुर

प्रकाशक :
बाहुबली प्रकाशन
लालकोठी, जयपुर-१५
फोन : ५१५४८०

मूल्य : ५ रुपया

शब्दांकन : अखिल बंसल

चित्रांकन : अनंत कुशवाहा

गोम्मटेश्वर बाहुबली

आलेख- अखिल बंसल चित्रांकन- अनन्त कुशवाहा

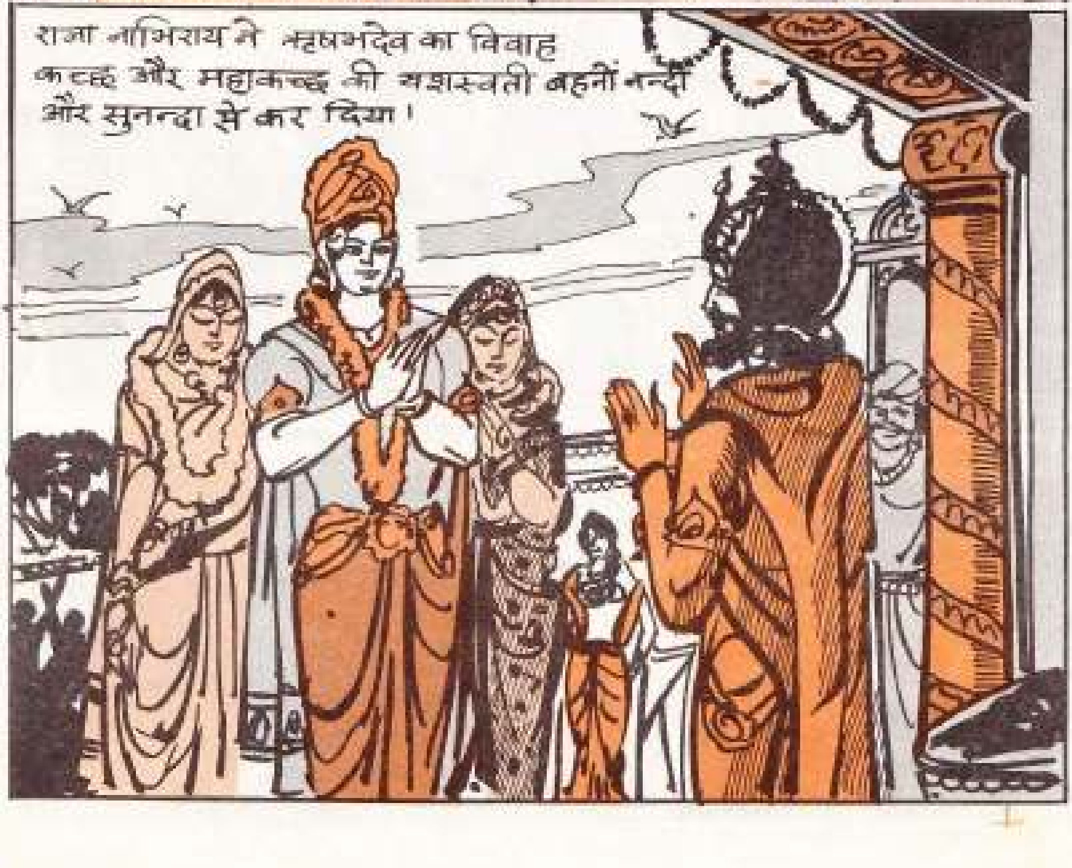

विवाहोत्सव में प्रजाजनों ने बड़ी खुशियां मनाई।
2
समय बीतता गया...
यशस्वती ने भरत आदि १०० पुत्रों तथा ब्राह्मी नामक पुत्री को जन्म दिया
सुनन्दा से बाहुबली पुत्र और सुन्दरी नामक पुत्री उत्पन्न हुई।
नाभिराय अपने राज्य का भार ऋषभदेव के कंधों पर डाल कर निश्चिंत होगये।
राजा ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प, विद्या आदि कार्यों का उपदेश देकर जन-सामान्य को ज्ञान कराया।

3
ऋषभदेव ने अपने बड़े पुत्र भरत को अर्थशास्त्र एवं नृत्य शास्त्र,
वृषभसेन को गंधर्व शास्त्र,
अनंतविजय को चित्रकला,
बाहुबली को कामशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, रत्न-परीक्षा, अश्व परीक्षा, हस्ति परीक्षा आदि शास्त्रों में
तथा शेष पुत्रों को भी अनेक शास्त्रों में निपुण किया.

समय बीतता गया. एक दिन राजसभा में नीलांजना नामक अप्सरा नृत्य कर रही थी.

4
नीलांजना के पैर डगमगाए और वह इस ढंग से पृथ्वी पर लेट गयी जैसे वह अपनी नृत्य कला का एक अभिनय कर रही हो
इन्द्र ने रस-भंग के भय से तुरन्त वैसी ही नर्तकी खड़ी कर दिया
और नृत्य चलता रहा
सभा में किसी को पता नहीं चला पर राजा ऋषभदेव से यह रहस्य छिपा नहीं रहा
जीवन की यह नश्वरता
जैसे नीलांजना का शरीर विनाशी था वैसे ही ये सब भोगोपभोग भी अस्थाई है
ये आभरण केवल भार रूप है, चन्दन का लेप मैल के तुल्य है, नृत्य पागल पुरुष की चेष्टा है और गीत संसार की करुण दशा का रुदन है.
ऋषभदेव ने संसार त्याग कर तपश्चरण करने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

5
ज्येष्ठ पुत्र भरत, जिनके नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा को अयोध्या का राज्य तथा...
...युवराज बाहुबली को पोदनपुर का राज्य प्राप्त हुआ. अन्य पुत्रों को भी विभिन्न देशों का राजा घोषित किया गया.
ऋषभ देव ने सब कुछ त्याग कर वैराग्य धारण कर लिया और मुनि बन गये.
मुनि ऋषभदेव ने केवलज्ञान प्राप्त किया.
राजर्षि भरत को तीन शुभ समाचार.
बधाई हो महाराज!
धर्माधिकारी से, ऋषभदेव को केवलज्ञान प्राप्त होने की, शुभ सूचना मिली
आयुध शाला के रक्षक ने चक्र रत्न प्राप्त होने का समाचार दिया.
कंचुकी ने पुत्रोत्पत्ति का समाचार दिया.

धर्म पुरुषार्थ, अर्थ पुरुषार्थ और काम पुरुषार्थ का फल मुझे एक साथ प्राप्त हुआ है किसका उत्सव पहले मनाएं .... धर्म पुरुषार्थ अधिक महत्वपूर्ण है।
हम भगवान ऋषभदेव की वन्दना करने चलेंगे
समवसरण में जाकर महाराज भरत ने भगवान ऋषभदेव की वन्दना की और...
..भरत ने चक्र रत्न का उत्सव मनाया।
अयोध्या लौट कर भरत ने चक्ररत्न की पूजा की...
..और फिर पुत्र का जन्मोत्सव मनाया, भरत ने दिलखोल कर दान दिया।

चक्रवर्ती पद के नियोग स्वरूप, भरत ने दिग्विजय के लिये प्रस्थान किया.

गंगा से समुद्र तट के बीच के छोटे मोटे राजाओं ने भरत की सुदृढ़ सेना के समक्ष अधीनता स्वीकार कर लेना ही उचित समझा.

(8) राजाओं ने भरत को बहुमूल्य वस्तुएं भेंट की.
लवण द्वीप के स्वामी मागधदेव ने भरत की अधीनता स्वीकार की.
उठो मागध देव
दक्षिण में कलिंग से केरल तक के प्रदेश में, विन्ध्याचल, नर्मदा पार कर, सौराष्ट्र में गिरनार पर्वत तक भरत की अधीनता स्वीकार कर ली गयी.
सिंधुनदी पार विजयार्ध पर्वत, चिलात तथा आवर्त के म्लेच्छ, तथा हिमवान पर्वत तक भरत की विजय दुंदुभी बजी. किसी ने प्रतिरोध का साहस नहीं किया.

दिग्विजय के बाद भरत अयोध्या वापस लौटे तो आश्चर्य! उनका चक्र द्वार पर ही रुक गया
9
ऐसा क्यों पुरोहित जी?
आपके भाइयों ने, विशेषत: बाहुबली ने आपकी अधीनता स्वीकार नहीं की है.
मंत्री जी, भाइयों के पास दूत भेजिए. अब केवल भरत ही इस पृथ्वी का शासक है, उन्हें भी मेरे चक्रवर्ती बनने की अनुमोदना कर देनी चाहिए।
जी आदेश महाराज।
महाराज, कोई भी राजपुत्र आपके समक्ष झुकने को तैयार नहीं है। सभी ने राज्य त्याग कर भगवान ऋषभदेव से जिन दीक्षा ले ली है।
हूं
भरत के अनुज बाहुबली, जो पोदनपुर के राजा थे, भरत का संदेश सुन कर मुस्करा उठे.
भरत को अहंकार हो गया है. मुझे पराजित किये बिना वे चक्रवर्ती नहीं बन सकेंगे.

मंत्री गुणवसंत, भरत को उत्तर दे दो हम युद्ध-भूमि में मिलेंगे.
जो आदेश महाराज
पोदनपुर के निकट भरत और बाहुबली की सेनाएं आमने-सामने खड़ी हो गयीं.
रुकिए वीरवर!
युद्ध से पूर्व दोनों पक्ष के मंत्रीगण आपस में वार्ता करना चाहते हैं.

11
प्रधान मंत्री दक्षिणांक, व्यर्थ रक्तपात क्यों हो? दोनों भाई द्वन्द्व-युद्ध कर लें.
हां कलकंठ, यही निश्चित तो होना है कि दोनों में श्रेष्ठ कौन है. दृष्टि, जल और मल्ल युद्ध से निर्णय हो जायेगा
हमने सर्वसम्मत निर्णय लिया है कि आप दोनों भाइयों में धर्मयुद्ध हो.
पूछिये, भरत को यह स्वीकार है?
मैं रणक्षेत्र का अनुभवी हूं और फिर चक्ररत्न मेरे पास है. मैं बाहुबली को परास्त कर दूंगा.
मैं इसे सहर्ष स्वीकार करता हूं.

12
धर्म युद्ध के निर्णायक चुन लिए गये और बाहुबली तथा भरत शक्ति परीक्षण के लिए सन्नद्ध होगये.
सर्व प्रथम दृष्टि युद्ध. एक दूसरे की आंखों में तब तक देखते रहना जब तक किसी की दृष्टि न झुके।
यह दृश्य फिर कभी देखने को नहीं मिलेगा.
इस अनोखे युद्ध को देखने के लिये लोगों की भीड़ बढ़ती गयी.
बाहुबली लम्बे थे. दृष्टि युद्ध में वे अपलक ताकते रहे पर भरत की गर्दन दुखने लगी, उनकी पलकें झपकने लगीं और अन्तत: वे हार गये.

13
दृष्टि-युद्ध के बाद जलयुद्ध. भरत पूरी शक्ति से बाहुबली पर पानी फेंकते रहे पर वे अडिग खड़े रहे.
बाहुबली ने पानी उछाला तो थपेड़ों को सहना भरत के वश की बात नहीं थी.
जल-युद्ध में भी भरत को हार माननी पड़ी.

चारो ओर बाहुबली की जय के नारे गूंजने लगे।
बाहुबली की जय!
भरत की सेना चुपचाप थी। बाहुबली की सेना विजय गान कर रही थी।
अभी विजय शेष है। यह विजय गान बन्द करो।
14
भाई के हृदय में दुख है तो मुझे ऐसा सुख नहीं चाहिए।

अभी मल्लयुद्ध शेष है। मैं कितना बलवान हूँ यह ....
... बाहुबली को बता दूंगा।
राजसपदा और वैभव भाई को भाई से लड़ा देता है।
भरत ने बाहुबली को ठेला।
अपनी हार मान लो।
कैसे मान लूं? अब मेरा भी दांव देखो।

बाहुबली ने भरत को कमर से पकड़ कर ऊपर उठा लिया।
तुम्हें चाहे जहां फेंक सकता हूं लेकिन मैं अनुज हूं, सदा प्रणाम करूंगा।
भूमि पर नहीं गिराऊंगा। आदर से कंधे पर बिठाऊंगा।
मेरा ऐसा अपमान!
महापराक्रमी बाहुबली की जय!
बाहुबली की विजय!

मेरी विजय नहीं, चक्रवर्ती भरत की विजय।
यही पूर्ण पराक्रमी, योद्धा पृथ्वीपति हैं।
भरत अपनी हार का अपमान नहीं सह पा रहे थे।
मैं अपने चक्र रत्न का आह्वान करता हूं।
अभी नहीं बाहुबली।
हमारा युद्ध समाप्त हो गया।
17

भरत के आह्वान पर चक्र प्रकट हो गया।
अब बाहुबली नहीं बच सकता। मैं उसका संहार करूंगा। यह मेरा अंतिम शस्त्र है।
18
चक्र ने बाहुबली की तीन परिक्रमा की और...
..चरणों में गिर गया।
हैं! चक्र निष्प्रभ कैसे होगया?

मुझसे भरत का अपमान हुआ। मैं कैसे प्रायश्चित करूं ?
मैं अब राज्य सम्पदा का यह भार नहीं धरूंगा।
19
मैं सब वैभव का त्याग करूंगा। अविनाशी पद प्राप्त करूंगा।
मैं नग्न दिगम्बर वेश धारण करूंगा।
मुझसे महाअपराध हुआ। आपका अनुज हूं। क्षमा कर दीजिए।
इतनी विनम्रता!

अनुज बाहुबली, मैं अपने निंदित कार्य से बहुत दुखी हूं। मुझे क्षमा कर अपना राज्य सम्भालो।
नहीं भ्राताश्रेष्ठ, मैं मुनि बनूंगा।
20
बाहुबली ने अपने पुत्र महाबल को राज्य सौंप दिया और...
महाराज महाबल की जय!
अपने मुकुट, कुन्डल, आभूषण उतारने लगे।

बाहुबली सभी वस्त्राभूषण उतार कर दिगम्बर बन गए।
उन्होंने अपने केश लुंचन कर लिए।
अचल होकर तप करने के लिए वे वन में चल दिए।

स्थिर, तपलीन बाहुबली की देह पर पक्षियों ने घोंसले बना लिए। लताएं लिपट गईं। जंगली पशु उनके पांवों के पास ठहरते। वैर भाव भूल कर विचरण करते।

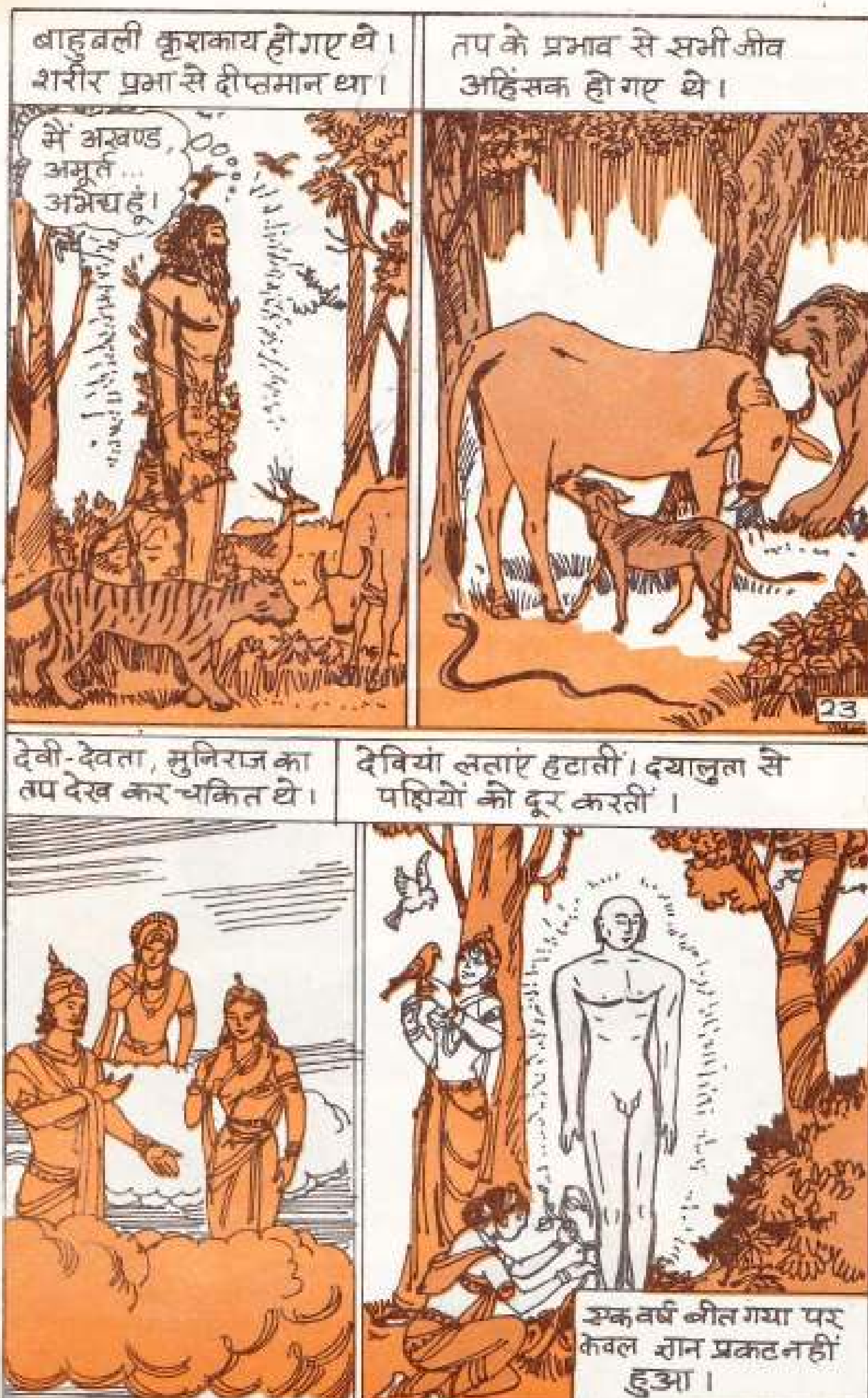
बाहुबली कृशकाय हो गए थे। शरीर प्रभा से दीप्तमान था।
मैं अखण्ड, अमूर्त... अभेद्य हूं।
तप के प्रभाव से सभी जीव अहिंसक हो गए थे।
देवी-देवता, मुनिराज का तप देख कर चकित थे।
देवियां लताएं हटातीं। दयालुता से पक्षियों को दूर करतीं।
एक वर्ष बीत गया पर केवल ज्ञान प्रकट नहीं हुआ।

राजा भरत और प्रजा गण विचारमग्न थे।
मुनिराज में ज्ञानालोक क्यों नहीं प्रकट हो रहा ?
भगवान ऋषभ देव से पूछें।
24
राजा भरत प्रजागणों के साथ कैलाश पर्वत पर गये।
बाहुबली के मन में तनिक सी फांस है। वे सोच रहे हैं कि वे भरत की शासित भूमि पर खड़े हैं।

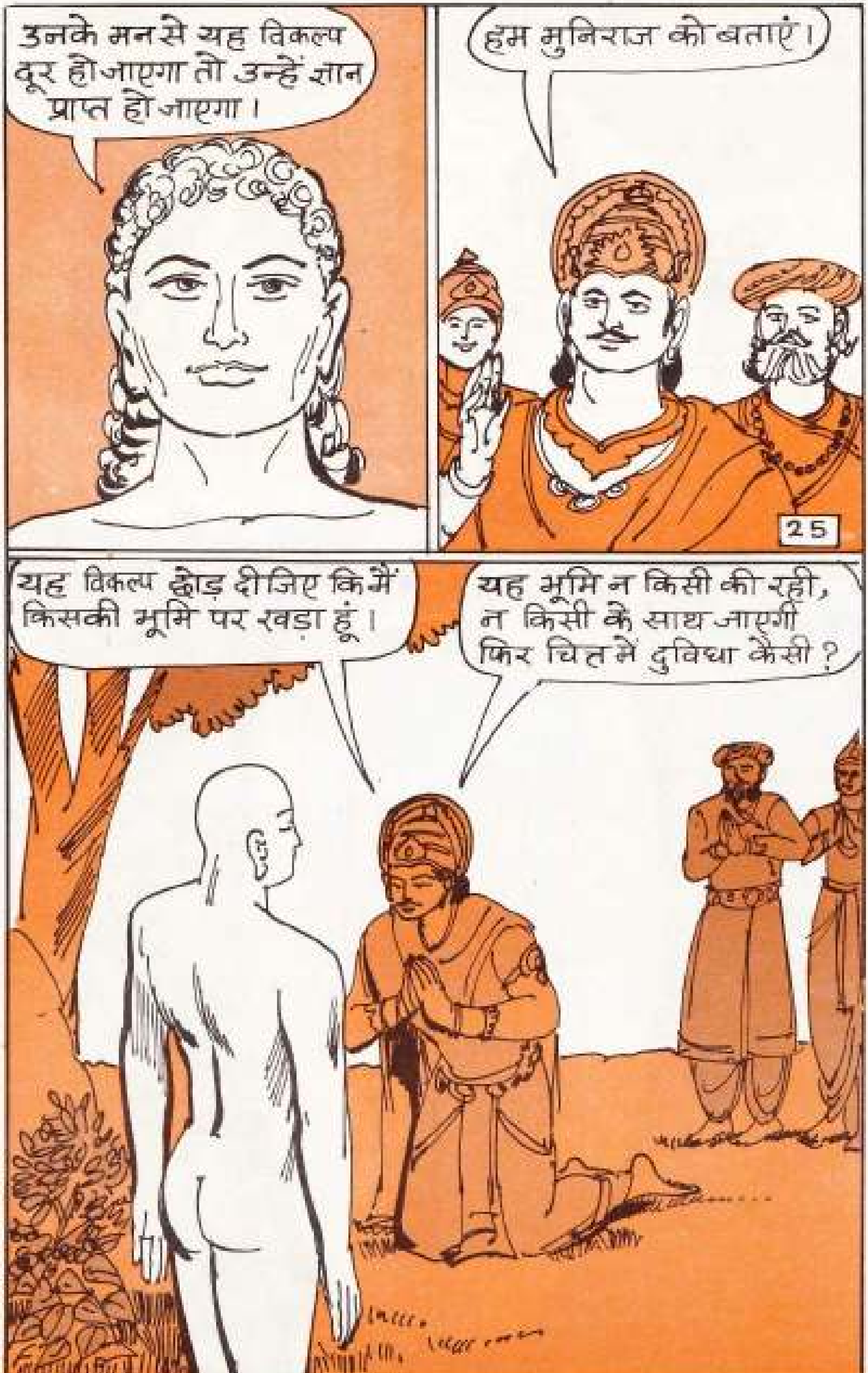
उनके मन से यह विकल्प दूर हो जाएगा तो उन्हें ज्ञान प्राप्त हो जाएगा।
हम मुनिराज को बताएं।
25
यह विकल्प छोड़ दीजिए कि मैं किसकी भूमि पर खड़ा हूं।
यह भूमि न किसी की रही, न किसी के साथ जाएगी फिर चित में दुविधा कैसी?

बाहुबली के हृदय से विभाव हट गए। उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त होगया। देवतागण पुष्प वर्षा व दुंदुभि नाद करने लगे।

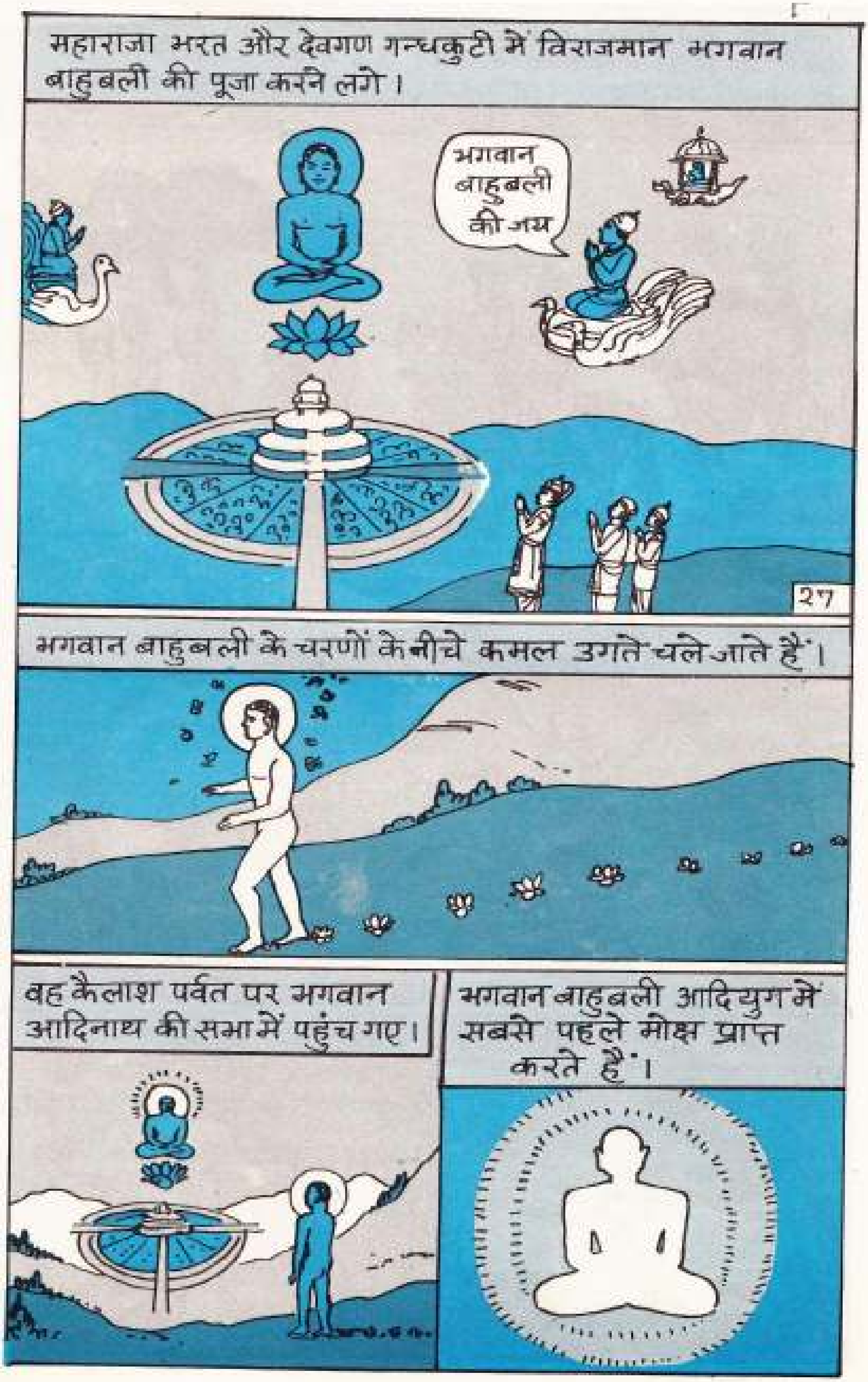
महाराजा भरत और देवगण गन्धकुटी में विराजमान भगवान बाहुबली की पूजा करने लगे।
भगवान बाहुबली की जय
27
भगवान बाहुबली के चरणों के नीचे कमल उगते चले जाते हैं।
वह कैलाश पर्वत पर भगवान आदिनाथ की सभा में पहुंच गए।
भगवान बाहुबली आदियुग में सबसे पहले मोक्ष प्राप्त करते हैं।

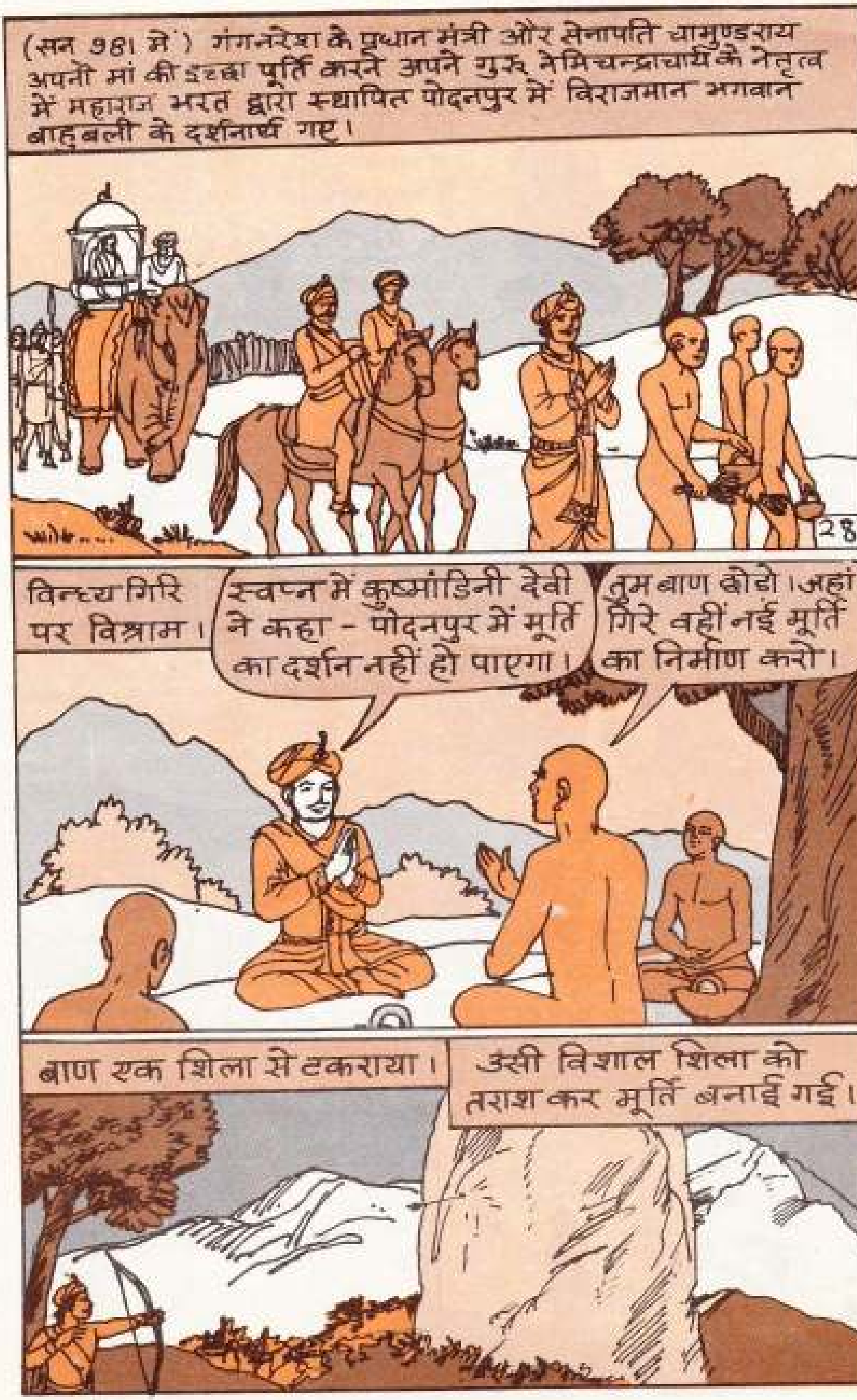
(सन 981 में) गंगनरेश के प्रधान मंत्री और सेनापति चामुण्डराय अपनी मां की इच्छा पूर्ति करने अपने गुरू नेमिचन्द्राचार्य के नेतृत्व में महाराज भरत द्वारा स्थापित पोदनपुर में विराजमान भगवान बाहुबली के दर्शनार्थ गए।
28
विन्ध्य गिरि पर विश्राम।
स्वप्न में कुष्मांडिनी देवी ने कहा - पोदनपुर में मूर्ति का दर्शन नहीं हो पाएगा।
तुम बाण छोड़ो। जहां गिरे वहीं नई मूर्ति का निर्माण करो"।
बाण एक शिला से टकराया।
उसी विशाल शिला को तराश कर मूर्ति बनाई गई।

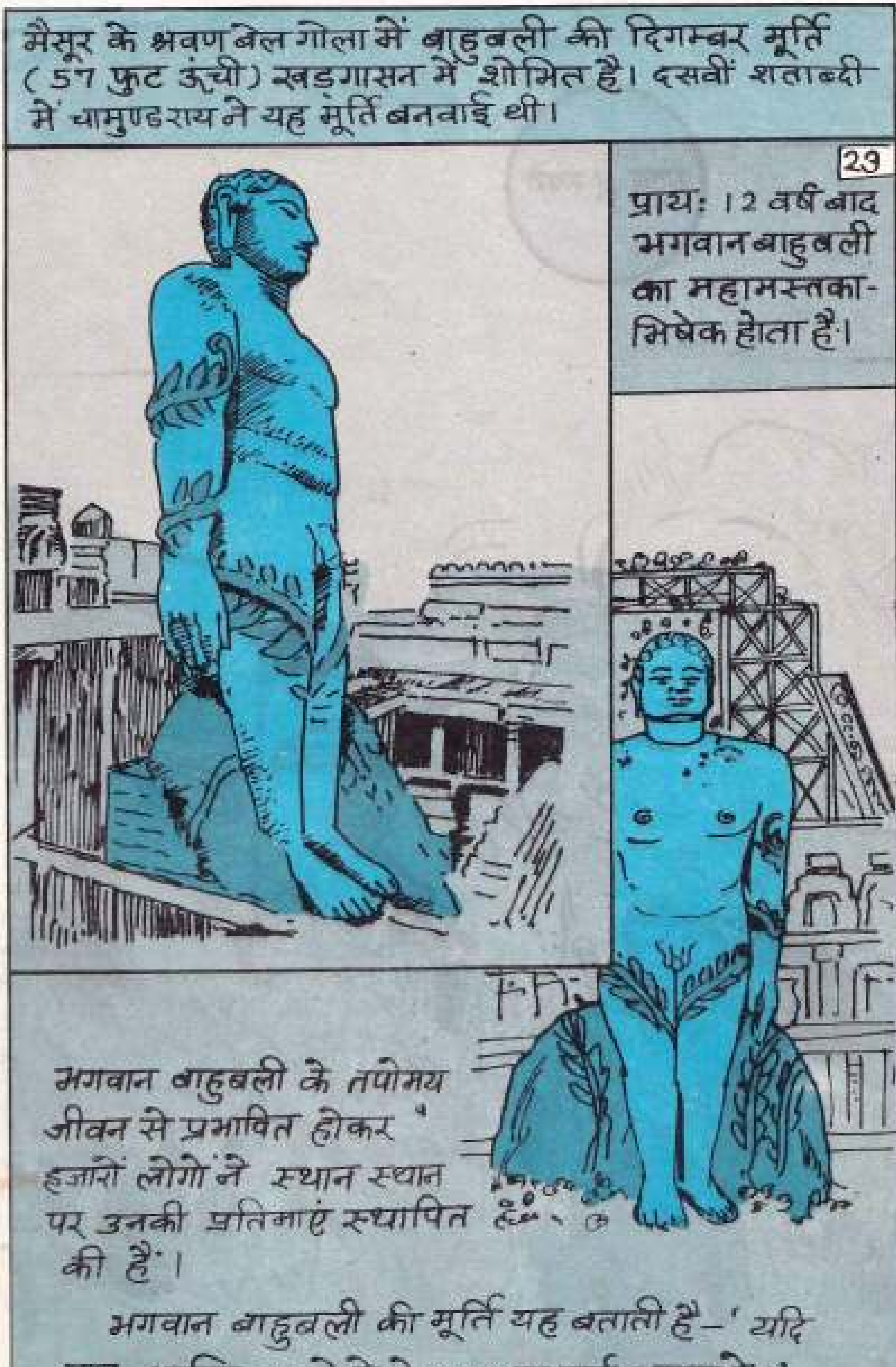
मैसूर के श्रवण बेल गोला में बाहुबली की दिगम्बर मूर्ति (57 फुट ऊंची) खड्गासन में शोभित है। दसवीं शताब्दी में चामुण्डराय ने यह मूर्ति बनवाई थी।
23
प्राय: 12 वर्ष बाद भगवान बाहुबली का महामस्तका-भिषेक होता है।
भगवान बाहुबली के तपोमय जीवन से प्रभावित होकर हजारों लोगों ने स्थान स्थान पर उनकी प्रतिमाएं स्थापित की हैं।
भगवान बाहुबली की मूर्ति यह बताती है—'यदि सुख-शान्ति चाहते हो तो त्याग का मार्ग अपनाओ।'
समाप्त

मूल्य-५ रुपये

मूल्य-5 रुपये
गोम्मटेश्वर बाहुबली